24 AUG 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL4

Name: VIVESH **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** Awake 19/F-11

Center & Date: M. Ngr. 24/08/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0877016

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या **1** और **5** **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के **उत्तर** दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

'प्रेमचंद' का 'गोदान' केवल कृषक समस्या तक सीमित नहीं रह जाता इसमें सामन्तवाद के ढहने व पूंजीवाद के उभरने के संकेत भी मिलते हैं। मिस मालती का यह कथन इस उभरते पूंजीवाद के संदर्भ में ही है जो वह सभा में कह रही है।

गोदान 1936 की रचना है यह सामंत-वाद के कमजोर होने का काल है। उभरता पूंजीवाद का आधार धन है। धन बाकी सारी प्रतिष्ठाओं यथा विद्या, सेवा, कुल आदि से ऊपर है। धन व्यक्ति की प्रतिष्ठा व सम्मान में वृद्धि करता है जबकी गरीब व्यक्ति को हेय

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि से देखा जाता है।

विशेष :-

* नई सभ्यता पूंजीवाद के उभरने का संकेत
* ऐसे ही संकेत मैला आंचल में भी प्रशान्त का कथन - " डाक्टर ने रोग की जड़ पकड़ ली है गरीबी व जहालत इस रोग के दो कीटाणु है।
* महाभोज में भी इसे दो ही वर्गों के रूप में दर्शाया गया है अमीर व गरीब।
* सामन्तवाद, पूंजीवाद आदि की चर्चा गोदान को एक व्यापक आधार वाली रचना बनाता है, जिससे इसे महाकाव्यात्मकता का दर्जा प्राप्त है।
* विश्व की 90% सम्पत्ति चंद व्यक्तियों के हाथ में है यह प्रेमचंद की इन पंक्तियों को प्रासंगिक बनाती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें।! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंचलिक उपन्यास की परम्परा में 'फणीश्वरनाथ रेणु' का 'मैला आँचल' एक महत्वपूर्ण प्रस्थान बिंदु है जिसने आंचलिक उपन्यासों की कमियों को नए तरीके से गढ़ा। अंचल की विशेषताओं का हुबहू वर्णन के कारण यह संभव हो पाया है। प्रस्तुत गद्यांश भी मेरीगंज के आंगोलिक वर्णन को प्रस्तुत करता है।

ग्राम्य संस्कृति की मिठास इन पंक्तियों से उद्घाटित होती है। कृषक जीवन खेतों में दृष्टिगत है। पेड़-पत्ती, नदी, कोयल की कूक आदि इस क्षेत्र का इतना मनोरम दृश्य प्रस्तुत करते हैं कि शहर से आए डा. प्रशान्त भी इसी में रम जाते हैं। और इसकी मिठास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को ग्रहण करते हैं।

विशेष:-

* तत्सम् शब्द = स्वर्णचिला, सुनहरी
  तद्भव शब्द = धरती, निवास
  देशज शब्द = दूब, गड्ढे, चैती
  का सुन्दर मिश्रण

* पूरे गद्यांश को पढ़ने पर मानस पटल पर मेरीगंज का चित्र उभरने लगता है बिम्बात्मकता व चित्रात्मकता का अद्भुत संप्रेषण।

* प्रकृति का संपूर्णतया में वर्णन जिसमें आन्तरिक व बाह्य पक्षों का समायोजन

* धरती = स्वर्णचिला, सोने की नदी
  चैती = कोयल की कूकने की आवाज
  उपमाओं का सहारा लिया गया है

* ग्राम्य संस्कृति की यह निशान आज भी मौजूद है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश भारतेंदु युग के प्रतिनिधि रचनाकार 'भारतेंदु' हरीश्चंद्र के नाटक "भारत दुर्दशा" से उद्धृत हैं। यहाँ अंधकार के विषय में बताया जा रहा है। भारत पर अंधकार के प्रभाव को बताया गया है

अंधकार अज्ञानता, बुद्धिहीनता का प्रतीक है अतएव इसकी उपस्थिति चोर, उलूक, लंपटो, मूर्खों, खलों में होती है। अंधकार के प्रभाव से मनुष्य निष्क्रिय बन जाता है। भारतेंदु जी ने भारत की दुर्दशा के कारणों की पड़ताल में धर्म की आडम्बरयुक्त कुरीतियों, अज्ञानता, अतिभौतिकतावाद को जिम्मेदार बताया है। जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, प्रेत, आदि के पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अंधविश्वास ने भारत को पीछे धकेल दिया है। यह अंधकार अज्ञानता, विवेकहीनता, बुद्धिहीनता, अंधविश्वास, अतिभौतिकता का ही है

विशेष:

* खड़ी बोली के विकास का काल। खड़ी बोली के आरंभिक रूप को देखा जा सकता है
* भाषा तत्सम प्रधान - तमोगुणी, गुहा, नेत्र, प्रत्यक्ष, प्रभाव
* यह अंधकार ही है जो राम को भी चिंतित करता है

"है अमानिशा उगलता गगन अंधकार"

- राम की शक्ति पूजा (निराला)

* भावनाओं को मानवीय पात्र के रूप में प्रतीकीकरण किया गया है
* यह अंधविश्वास, अतिभौतिकतावाद अभी भी भारत में मौजूद है यथा उपभोक्तावादी संस्कृति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' एक राजनीतिक उपन्यास है जिसमें 'मन्नू भंडारी' ने राजनीति की विद्रूपताओं को उद्घाटित किया है। प्रस्तुत प्रश्नांश राजनीति व साहित्य के बीच अंतर स्पष्ट करता है।

मन्नू भंडारी ने साहित्य की तुलना में राजनीति को अति संवेदनशील माना है जिसमें पल-पल में कुछ भी गठित हो सकता है। यह अवसरवादी राजनीति की ओर संकेत है जिसमें अवसर के लिए व्यक्ति को प्रत्येक क्षण जागरूक रहकर इंतजार करना होता है। विभु की मौत इसी अवसरवादिता को स्थापित करता है जिसका लाभ दा साहब, दत्ता बाबू, मुकुल बाबू, DIG आदि को मिला।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साहित्य एवं प्रोजनाबद्ध तरीके से अलग लेकर लिखा जाता है। जबकि राजनीति में ऐसा नहीं।

निष्कर्ष :-

* मुंशी प्रेमचंद ने भी साहित्य व राजनीति का संबंध बताते हुए लिखा है कि यह "राजनीति की सच्चाई बताने वाला नहीं समाज व राजनीति से आगे चलने वाली मशाल है।"

* अवसरवादी राजनीति की ओर संकेत

* होर्स ट्रेडिंग, पल भर में सरकार गिरना, विधायकों की खरीद, मंत्रियों को लालच आदि इसी राजनीतिक विद्रूपता का वर्तमान उदाहरण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

हिंदी साहित्य के महान् रचनाकार 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' जी ने निबंध क्षेत्र में भी वैचारिक निबंध लिखकर योगदान दिया है। प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ उनके निबंध "कविता क्या है" से उद्धृत हैं जिनमें उन्होंने कविता की कसौटियों को बताया है। इसे 'चिंतामणि' में संकलित किया गया है।

आचार्य शुक्ल जी ने कविता को ज्ञान योग, कर्म योग के समकक्ष लाकर भाव योग की संज्ञा दी है। अतएव यह भावपूर्ण संगीत का वर्णमय चित्र ही है। आचार्य शुक्ल जी ने कविता को लोकमंगल की साधना हेतु साधन माना है। लोकमंगल तभी हो सकता है जब साहित्यकार कविता के माध्यम

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से व्यक्ति व पाठक को अन्धकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर, जड़ से चेतन की ओर और बाह्य जगत से अंतर्जगत की ओर ले जाए।

विशेष

(i) प्रथम पंक्ति कविता के भावपक्ष का प्रतीक

(ii) द्वितीय पंक्ति कविता के उद्देश्य को लोकमंगलकारी प्रस्तुत करती है।

(iii) मुंशी प्रेमचंद ने भी साहित्य को क्रांतिशील माना है जो बुराईयों से अच्छाइयों की ओर ले जाता है।

(iv) भाषा में तत्सम प्रधानता है।

(v) वाक्य विन्यास इतना प्रभावी कि एक भी शब्द व्यर्थ नहीं लग रहा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

3. (क) 'प्रसाद की नाट्यभाषा उनके नाटकों की अभिनय-संभावनाओं को क्षरित करती है।' स्कंदगुप्त के आधार पर इस मत का परीक्षण कीजिये। 20

प्रसाद के नाटकों की भाषा आलोचकों के मध्य विवाद का विषय रही है। हिंदी नाटकों में जितना विवाद प्रसाद के नाटकों की भाषा को लेकर हुआ उतना संभवतः किसी रचना के लिए नहीं।

आचार्य शुक्ल, डा. नगेन्द्र, मुंशी प्रेमचंद जैसे रचनाकारों ने इनकी भाषा को अभिनेयता में बाधक बताया है तो वहीं हबीब तनवीर व डा. चतुर्वेदी ने इसे समृद्ध माना है

डा. शुक्ल जी की दृष्टि में प्रसाद चित्रमय लच्छेदार भाषा का प्रयोग करते हैं, डा. नगेन्द्र ने इसे नाटक के चापल्य से हीन व मुंशी प्रेमचंद ने इसे निर्जीव भाषा कहकर इसकी अभिनेय संभावनाओं को संदेह की दृष्टि से देखा है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वस्तुतः इन आक्षेपों के कई कारण हैं।

पहला, प्रसाद जी की भाषा अत्यधिक तत्सम-पन के कारण क्लिष्ट है, जिससे यह जनसाधारण के लिए संप्रेषणीय नहीं है।

दूसरा आरोप यह है कि यह पात्रानुकूल भाषा नहीं है।

तीसरा इसमें आभिनियोजित चांचल्यता यथा द्वन्द्वात्मकता उतार चढ़ाव आदि की कमी है।

सूक्ष्मतया विश्लेषित करें तो यह आक्षेप पूर्णतया सही नहीं है। प्रसाद जी ने स्वयं कुछ आक्षेपों का उत्तर दिया है। प्रसाद जी के नाटक उनके अनुसार सुरुचिसम्पन्न सामाजिकों के लिए हैं साथ ही उनका मानना है ''यदि सभी पात्र अपने अनुसार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषा बोलेंगे तो नाटक समझेगा कौन"।

प्रसाद जी की भाषा में अभिव्यंजना के निम्न गुण विद्यमान है-

इनकी भाषा बिंबात्मकता से युक्त है जिससे वातावरण अनुभूति का विषय बना रहता है। युद्ध के माहौल का वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है-

"युद्ध क्या गान नहीं है? रुद्र का श्रृंगीनाद भैरवी का तांडव नृत्य और शस्त्रों का वाद्य यंत्र मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है"

भाषा में ध्वन्यात्मकता के गुण भी पाए जाते हैं-

"प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद जी ने भाषा संप्रेषण की विभिन्न शैलियों का भी प्रयोग किया है यथा सूत्र शैली (युद्ध क्या गान नहीं है) ऐतिहासिक काल के शब्दों का प्रयोग (महाबलाधिकृत, विषयपति) आदि।

इन्होंने नाट्य भाषा को भी शामिल किया है जिसमें नेपथ्य की ध्वनियाँ तथा भाव भंगिमाओं से संप्रेषण होता है-

"घुटने टेकती है, स्कन्द उसके सिर पर हाथ रखता है"

नाटक की परम्परा प्रसाद के समय अनुपस्थित थी जिससे कुछ हद तक नाटक की भाषा की अभिनियोजितता सीमित होती है किंतु फिर भी भाषा के वे सभी तत्व मौजूद हैं जो भाषा की संप्रेषणीयता के लिए आवश्यक हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामान्यतया प्रेमचंद अपनी कहानियों में किसी एक ही विषय को उठाते हैं। उदाहरण के लिए पूस की रात में कृषक समस्या, बूढ़ी काकी - वृद्ध समस्या, ईदगाह में आर्थिक अभावों का बालपन पर प्रभाव। ~~अलग्यो~~ अलग्योझा इस दृष्टि से अनूठी कहानी है जिसमें एक साथ कई समस्याओं को उठाया गया है।

अलग्योझा में कृषक समस्या, परिवार टूटने की समस्या, वैधव्य की समस्या आदि को उठाया गया है। विषय वैविध्य के कारण यद्यपि कथानक जटिल महसूस होता है किंतु प्रेमचंद ने अच्छा संतुलन साधा है। कहानी पढ़ते समय पाठक का संबंध ऐसा जुड़ता है कि पाठक को कोई कठिनाई

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महसूस नहीं होती।

भोला अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात पन्ना से शादी करता है। भोला के पुत्रों रघु तथा केदार के माध्यम से संयुक्त परिवार की आस्था को प्रेमचंद ने प्रदर्शित किया है। पारिवारिक जिम्मेदारियों को व्यक्त करते हुए यद्यपि कहीं कहीं उनका आदर्शवाद हावी दिखता है।

रघु मुलिया तथा केदार-मुलिया की कथा को इस प्रकार संयोजित किया है कि कथानक में कहीं भी बिखराव नजर नहीं आता।

मुलिया के चरित्र के माध्यम से वैधव्य से जुड़ी समस्याओं को उजागर करने में प्रेमचंद सफल रहे हैं, वैधव्य

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किस प्रकार आर्थिक असुरक्षा को जन्म दे देता है। यह रघु की मौत से प्रदर्शित होता है।

अलग्योझा कहानी में चाहे पात्र, व कथाओं व विषयों के स्तर पर भले ही विविधता हो यह प्रेमचंद का कौशल है जिसने इसे एक सफल व संप्रेषणीय कहानी बनाया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास का अवलोकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदर्श उपन्यास कला के छः तत्व माने गए हैं- कथानक योजना, चरित्र योजना, संवाद योजना, जीवन दर्शन एंव उद्देश्य, देश काल वातावरण तथा भाषा शैली। महाभोज उपन्यास इन तत्वों के आधार पर प्रभावी उपन्यास है तो है ही, नाटकीय भाषा व नाटकीय तत्वों युक्त उपन्यास है।

महाभोज का कथानक राजनीति की विद्रुपताओं पर आधारित है। यह एक राजनीतिक उपन्यास है। इसके अतिरिक्त इसके कथानक में अन्य समस्याओं यथा आर्थिक समस्याओं, सामाजिक जीवन के तत्व भी उपस्थित हैं। समग्रता में यह एक व्यापक रूप के साथ उपस्थित है

महाभोज में चरित्रों की संख्या न तो

Copyright © Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ज्यादा रखी गयी है और न ही कम। चरित्रों का आनुपातिक संतुलन साधा गया है यथा दा साहब, सुकुल बाबू, मि० सक्सेना का चरित्र अच्छी तरह से उभरा है। चरित्रों पर व्यक्तिगत विचारधारा थोपी नहीं गयी है। उदाहरण के तौर पर मि० सक्सेना के व्यक्तित्वांतरण से पहले पर्याप्त स्थितियाँ जुटायी गई हैं।

महाभोज की संवाद योजना चुस्त है। पात्रों के अनुकूल ना केवल संवाद योजना है बल्कि भाषा भी है जो कथानक को आगे बढ़ाने में सहायता करता है। यथा-

"कभी कभी तो रात भर छटपट करे सरकार"

" ये ससुरे सीना तानकर आँख में आँख डालकर बात करते हैं।"

भाषा में प्रतीकात्मकता बिम्बात्मकता ध्वन्यात्मकता का प्रयोग किया गया है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचना का उद्देश्य न केवल राजनीतिक विद्रूपताओं का वर्णन करना है बल्कि बिसु बिंदा की चेतना को लेखिका ने आगे भी जारी रखकर इसे देश काल की सीमा से बाहर कर दिया है -

"दुर्निवार, उस सम्बोधन भरी लपकती विराल आग ने लीक का जो बिसु व बिंदा तक ही नहीं रुकती।

इन सबके अतिरिक्त यह उपन्यास नाटकीय तत्वों से युक्त है। शुरुवात ही नाटकीय मोड पर होती है - "लावारिस लाश को गिद्ध नोच नोच कर खा रहे हैं।" इसके अतिरिक्त नाट्य भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

महाभोज की यह सफलता ही है कि यह केवल सुपठ्य रूप में एक व्यापक जनता तक पंहुचा है बल्कि इसके विषय ने वर्तमान समय के परिपेक्ष के समक्ष अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखा है

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देशकाल, वातावरण और भाषा-शिल्प की दृष्टि से मैला आँचल की समीक्षा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और..।

महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' कृषक जीवन की त्रासदी को व्यक्त करने वाला उपन्यास है। मुंशी प्रेमचंद ने होरी के माध्यम से कृषक समस्याओं, कृषि से आर्थिक समस्याओं को उठाया है। होरी मृत्यु के अत्यन्त सन्निकट है ऐसे में उसके मनोभावों को लेखक द्वारा व्यक्त किया गया हो

मृत्यु शैय्या पर बैठे होरी को अपना पूरा जीवन एक चित्र की भांति मानस पटल पर दिखाई देता है। यह किसी श्रृंखलाबद्ध तरीके से ना होकर यादृच्छिक है। वह अपने अंतिम क्षणों में अपने अच्छे दिनों, स्वप्नों को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

याद करता है। यही स्थिति होरी की है वह अपने बालपन, माता, गोबर धनिया सभी को याद करता है और अपनी आकांक्षा ~~केवल~~ गाय को भी। यह गाय का सपना ही था जो रचना के प्रथम पृष्ठ से अन्तिम पृष्ठ पर मौजूद था और रचना के नाम को 'गोदान' तक ले गया।

विशेष:-

* मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग
* फ्लैश बैक तकनीक का प्रयोग
* बिंबात्मकता व चित्रात्मकता लिए हुए भाषा पाठक के मन को छूती है
* होरी का यही त्रासद अंत प्रेमचंद की आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद को नग्न यथार्थवादी में तब्दील करता है।
* वर्तमान में किसान आत्महत्या इसी समस्या का बदला हुआ स्वरूप

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) आर्य ! जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

घ का उत्तर है।

'दिव्या' एक नारी केंद्रित उपन्यास है जिसमें 'यशपाल' ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से नारी संबंधी दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। प्रेस्थ का पृथुसेन को यह कथन नारी को भोग्या रूप में मानने का दृष्टिकोण है।

यशपाल ने प्रेस्थ के माध्यम से यह बतलाया है किस प्रकार समाज का एक वर्ग नारी को भोग्या के रूप में देखता है। नारी को योग में, साधना में, सफलता में बाधा मानकर त्याज्य माना है और सफलता की प्राप्ति पर उस पर अलौकिक अधिकारों को मान्यता प्रदान की है। नारी को पतन का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

द्वार कहा जाता है। यह ~~कबीर~~ मध्यकाल के उस धारणा के करीब है जिसमें नारी को 'माया' कहा गया था। यह उस सिद्धांत के भी खिलाफ है जिसमें कहा जाता है "हर सफल पुरुष के पीछे एक नारी का हाथ होता है।"

विशेष:-

* नारी संबंधी पारंपरिक, उपभोक्तावादी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति
* प्रेमचंद ने अन्यत्र भी कहा है - "तुम सफल बनकर अनेक नारियों का भोग कर सकते हो।
* वर्तमान में नारी का इस उपभोक्तावादी संस्कृति में 'वस्तुकरण' (विज्ञापन आदि में) इसी दृष्टिकोण का सूक्ष्म व बदला हुआ रूप
* उद्धरण शैली का सुंदर प्रयोग।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें। (Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

'एक दुनिया समानान्तर' में 'राजेन्द्र यादव' ने जिन कहानियों का संकलन किया है उनमें 'धर्मवीर भारती की गुलकी बन्नो' भी एक है।

इस कहानी में लेखक ने भारतीय समाज में नारी की स्थिति का यथार्थपूर्ण चित्रण किया है।

तत्कालीन समाज में नारी को अपने स्वार्थपूर्ति, उद्देश्य पूर्ति व स्वार्थलिप्सा के साधन के रूप में समझा जाता था। इसे बच्चों को जन्म देने वाला उपकरण माना जाता था तथा दूध पिलाने, घर का कार्य करने की जिम्मेदारी दी जाती थी। यह अमानवीय व्यवहार ही है जिसने समाज में नारी को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पीछे धकेला। साथ ही साथ स्वतंत्रता के नाम पर उसे कुछ कहने का भी अधिकार नहीं। वह घरेलू हिंसा का भी शिकार थी।

विशेष :-

* यही दृष्टिकोण है जिसने पितृसत्तात्मकता को समाज में उत्पन्न किया।
* कानून सुरक्षापायों के बावजूद महिलाओं की यह स्थिति विद्यमान। 50% महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार।
* धर्मवीर भारती का यथार्थवादी चित्रण जो नई कहानी की विशेषता के रूप में उभरा
* ~~महाभोज~~ मैला आंचल में भी कहा गया है "जोरू जमीन जोर का नहीं तो किसी और का"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

प्रश्न का उत्तर

प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ छायावादी प्रतिनिधि रचनाकार 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गयी हैं।

देवसेना स्कन्दगुप्त को उनके भीतर उत्पन्न भय के संबंध में समझा रही हैं।

भय एक स्वाभाविक भावना है। निर्भय होना भय रहित होना नहीं है बल्कि भय के कारणों की अनुपस्थिति हो भय का कारण किसी दूसरे में भय की उपस्थिति है। शक्ति के दम पर भय उत्पन्न किया जा सकता है किंतु वह अपने भीतर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी भय के बीज को डाल देता है।
अतएव शक्ति अन्य व स्वयं के भय को जन्म देती है।

विशेष :-

* 'भय' जैसे भाव का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण
* उद्बोधनात्मक शैली में देवसेना का कथन
* भाषा तत्सनी गुण युक्त - सुषुप्त, अंकुरित जैसे शब्दों का प्रयोग।
* प्रसाद के चरित्र भय संशय, साहस, वीरता के मिश्रित रूप होते हैं यह यहाँ प्रमाणित होता है।
* परमाणु शक्ति सम्पन्नता वर्तमान में स्वयं दूसरे देशों को भले ही भय में रखे किन्तु स्वयं के लिए भी भय को उत्पन्न करती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

'मोहन राकेश' द्वारा रचित प्रथम नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में सत्ता व सृजनशीलता का द्वन्द्व जो दिखाया गया है वह सुख दुख के रूप में इन पंक्तियों में इंगित होता है

सुखों व दुखों में संबंध परस्पर सहभागीता का है। ये एक ही रथ के दो पहियों के समान हैं। व्यक्ति आंकाक्षायों के कारण स्वंय को दुखी रखता है। और एक इच्छा से दूसरी इच्छा पूर्ति उसे एक दलदल में धकेल देती है। अतएव व्यक्ति को सुखों की प्राप्ति हेतु निवृत्ति मार्ग अर्थात सुख दुख से परे जाने को अपनाना चाहिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

विशेष :-

* इच्छा ज्ञान व क्रिया का यही समन्वय प्रसाद जी ने कामायनी में किया है जिसे समरसता कहा गया है

"समरस थे जड़ चेतन सुंदर साकार बना था"

* निवृत्ति मार्ग भारतीय योग धारा के करीब

* वर्तमान में पर्यावरणीय समस्याओं के लिए इस इच्छा की श्रृंखला को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है

* गूढ़ विचारों का सरल भाषा में संप्रेषण का प्रयास।

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'गोदान' भारतीय किसान के पूरे जीवन-संघर्ष और इसमें उसके पराभव की करुण गाथा है।' इस कथन के संदर्भ में 'गोदान' का विवेचन कीजिये। 20

गोदान उपन्यास में सामंतवाद, पूंजीवाद, शहरी व ग्रामीण जीवन के संघर्षों को अभिव्यक्ति मिली है। किंतु जिस समस्या को सर्वाधिक अभिव्यक्ति मिली है वह है कृषक समस्या। होरी के माध्यम से भारतीय किसान की संपूर्ण जीवन गाथा को तथा उसकी मौत से इसके पराभव को व्यक्त किया है।

होरी हर एक भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता हुआ पात्र है। रचना के प्रथम पृष्ठ से ही होरी संघर्ष करता हुआ प्रतीत होता है। कृषक के रूप में आर्थिक विपन्नता इतनी अधिक है कि वह एक गाय भी नहीं खरीद सकता।

" हर सद्‌ गृहस्थ की भांति होरी के मन में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी गऊ की लालसा चिरकाल से चली आ रही थी। यही इसके जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न सबसे बड़ी साध थी।

कृषक गरीब होने के साथ साथ किस प्रकार धर्म की मान्यताओं, समाज के नियमों में बंधा रहता है। यह भी होरी के माध्यम से व्यक्त हुआ है। धर्म, मरजाद, बिरादरी जैसी जंजीरों से वह अपने आप को बाहर नहीं निकाल पाता।

" मजदूरी में रुपया है, किंतु खेती में जो मरजाद है वह मजूरी में कहाँ"

• धर्म का आडंबरीय व गिरत चरित्र किसान की मनः स्थिति को परिवर्तित करता है -

"होरी के पेट में धर्म की क्रांति मची हुई थी। अगर ठाकुर बनिए के रुपये होते तो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्हें ज्यादा चिंता नहीं होती किंतु ठाकुर के रुपये।

यह महाजनी व सूदखोरी की शोषक वर्ग स्थिति को व्यक्त करता है। शोषक व्यवस्था से बचाव की उम्मीद न्याय व्यवस्था से होती है किंतु पंचों के माध्यम से यह प्रदर्शित होता है कि वे भी गरीबों का शोषण करने वाली मानसिकता का शिकार हैं

होरी व धनिया के तीन पुत्रों की मौत आर्थिक विपन्नता के कारण ही हुई है। धनिया का मानना था कि "थोड़ी दवा दारू की होती तो वे बच जाते"।

किसानों का शोषण की गहराई इस स्तर की है कि वे पैसा वसूलने हेतु न तो किसान के बैल लेने से हिचकते हैं और

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ना ही उसकी जमीन।

आर्थिक अभाव तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ अन्य समस्याओं को भी जन्म देता है जैसे बेमेल विवाह।

इन सभी कृषक समस्याओं की परिणति यह होती है कि आखिरकार संघर्ष दम तोड़ देता है। होरी की मृत्यु हर भारतीय किसान की मृत्यु है जो अपनी मृत्यु पर भी आर्थिक चिंताओं में घिरा है। "जो पैसे हैं वो क्रिया कर्म में खर्च हो जाएंगे।"

प्रेमचंद गोदान में कृषक की हर समस्याओं को गहराई से उठाने, विश्लेषण करने में सफल रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

यशपाल मार्क्सवादी हैं। व्यक्तिगत विचारधारा सामान्यतया रचनाओं में व्यक्त होती है किंतु यशपाल दिव्या में इससे बच निकलकर जाने में सफल रहे हैं। दिव्या में मार्क्सवादी विचारधारा वृहत् तौर पर सीधे सीधे तो नहीं सूक्ष्म तौर पर व्यक्त हुई है

मार्क्सवादी चिंतन मानववादी चिंतन है। इसमें केंद्र में मनुष्य है तथा साध्य भी मनुष्य है। यह प्रकार के शोषण का विरोध करता है। दिव्या में भी शोषण के विभिन्न रूपों की चर्चा हुई है तथा इसके प्रति विरोध का स्वर दिखता है

" द्विज पुत्र को स्तन पान पहले कराने की स्वामिन की आज्ञा थी। अपने पुत्र शाकुल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लिए दूध नहीं बनता था। ... वह अपने दूध की चोरी करने लगी थी।
(दास प्रथा)

जन्म का अपराध। क्या इसका किसी प्रकार मार्जन संभव है? क्या धन की वैभव, विद्या या वीरता की शक्ति इसे बदल नहीं सकती।
(जातिगत भेदभाव)

मार्क्सवादी विचार राज्य को शोषण के उपकरण के रूप में ही देखता है। धर्मशील देव शर्मा का यह कथन इसी को प्रमाणित करता है- " इतने सालों तक न्याय से जुड़े रहने के पश्चात् मैं यही समझ पाया कि न्याय व्यवस्था व्यवस्थापक के अधीन है। "

मार्क्सवादी विचार विवाह व्यवस्था को शोषण प्रक्रिया में ही शामिल करते हैं। मारिया के माध्यम से अपने मार्क्सवादी विचार

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल ने प्रस्तुत करते हुए कहा है-

" कुल वधू, कुल माता, कुल महादेवी के आसन उसे भोगने वाले पुरुष के प्रयाय मात्र हैं।"

यद्यपि मार्क्सवाद की यांत्रिक जड़वत विचारधारा का यशपाल ने अतिक्रमण भी किया है। धर्मरक्षित देव शर्मा का रानी की मृत्यु पर शोक प्रकट करना तथा पृथुसेन द्वारा धार्मी सेवा को मानना मार्क्सवाद के विरुद्ध है।

दिव्या में यशपाल का मार्क्सवादी स्वर उतना वृहद रूप में नहीं व्यक्त हुआ है जो दादा कामरेड, पार्टी कामरेड जैसे उपन्यासों में हुआ है। यह रचना में पूरी तरह से घुल मिल गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

डॉ० रामविलास शर्मा ने तुलसी साहित्य पर लगे आक्षेपों को तर्क, प्रमाण व उद्धरण के आधार पर खारिज करते हुए "तुलसी साहित्य के सामंतविरोधी मूल्य' निबंध की रचना की। आलोचनात्मक शैली में लिखा गया यह निबंध तुलसी की रचनाओं को प्रगतिशील साहित्यिक रचनाओं के रूप में प्रतिस्थापित करता है।

तुलसी पर सबसे बड़े आरोप वर्ण व्यवस्था के समर्थक होने के दावे को शर्मा ने उनकी जातिविरोधी चेतना से खारिज किया है। तुलसी साहित्य में उपस्थित पंक्तियां -

धूत कहौ अवधूत कहौ
रजपूत कहौ, जुलाहा कहौ

का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्वयं तुलसी जातिगत भेदभावों के शिकार हुए थे। शर्मा का मानना है कि तुलसी का साहित्य समावेशी प्रकृति का है जिसमें केवट, निषाद, शबरी आदि को पिछले साहित्यों की तुलना में अधिक महत्व मिला है।

तुलसी पर नारी विरोधी होने के आरोपों का उन्होंने सिरे से खंडन किया है। "ढ़ोल गंवार शूद्र पशु नारि। सकल ताड़ना के अधिकारी" के विचार को तुलसी का न बताते हुए समुद्र का विचार बताते हुए तुलसी का विचार निम्न पंक्तियों के माध्यम से बताया है-

कत विधि सृजी नारि जग माहिं ॥
पराधीन सपनेहुं सुख नाहिं ॥

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तुलसी साहित्य सामंतवाद के खिलाफ लिखा गया साहित्य है। इसीलिए जिन अभावों दारिद्रता, आर्थिक, अकाल, भूख आदि को तुलसी ने झेला था उन्हें अपने साहित्य में ना केवल यह कहकर

"नहिं दारिद्र सम दुख जग मांहि"

" आगि वडवाग्नि ते बड़ी है आगी पेट की"

स्थान दिया बल्कि इसका समाधान प्रस्तुत करते हुए रामराज्य की संकल्पना भी प्रस्तुत की।

" जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।

सो नृप अवसि नरक अधिकारी।।"

शर्मा जी के अनुसार तुलसी का साहित्य भारत के जातीय चरित्र की ही अभिव्यक्ति है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय जातीय चरित्र जीत न्याय को मानता है। तुलसी के राम उस न्याय की स्थापना में हर पल प्रयास कर रहे हैं। धैर्य जो भारतीय जातीय विशेषता है उसका उदाहरण लक्ष्मण के मामले में दिखता है धैर्य की सीमा पार होने पर वे शस्त्र उठाते हैं। भारत की जनता का भी यही रूप है।

यद्यपि राम विलाप शर्मा के भाव कुछ हद तक पूर्वाग्रहों से पुष्ट दिखाई पड़ सकते हैं किंतु उन्होंने विषय प्रामाणिकता तथा विश्लेषण से तुलसी साहित्य का मूल्यांकन किया है वह तुलसी के लोकनायकत्व को और अधिक मजबूती प्रदान करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित-प्रश्न को उठाने में कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

प्रेमचंद के साहित्य की विशेषता है कि वे सामाजिक समस्याओं को उठा कर उनका मार्मिक चित्रण करते हैं। पूस की रात में कृषक समस्या बूढ़ी काकी में वृद्ध समस्या को उठाया गया है दलित चेतना की अभिव्यक्ति उनकी कहानी सद्गति व कफन, दूध का दाम में दिखी है

प्रेमचंद किसी भी प्रश्न को इतनी गंभीरता से उठाते हैं कि उनके पात्रों के नाम भी मानो समस्याओं को कह रहे हों। दुखी चमार उनका ऐसा ही पात्र है। यह उनका यथार्थवादी दृष्टिकोण ही है

सद्गति में दलितों से जुड़ी हर समस्या को उठाया है। दुखी चमार का ब्राह्मण द्वारा शोषण दिखाया गया है। ब्राह्मण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्ग धर्म के नाम पर तथा धर्म की आड़ में किस प्रकार शोषण करते हैं, यह इस प्रकार प्रदर्शित किया है मानो पाठक का ह्रदय रो उठे।

दुःखी चमार द्वारा चिलम हेतु आग माँगे जाने पर आग के सिर पर गिरने पर भी स्वंय को दोषी ठहराया जाता है। यह दलित वर्ग के धर्म, सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों से बंधे होने का प्रतीक है। इन दबावों के कारण व्यक्ति इतनी कुंठा का शिकार होता है कि वह व्यवहारिक जीवन को ही वास्तविक सत्य मान लेता है।

दुःखी चमार की मृत्यु पर ब्राह्मण वर्ग की गैर संवेदनशीलता दलित चेतना को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गहराई से व्यक्त कर पाने में सहायता करती है

सद्गति प्रेमचंद की उस दौर की रचना है जब वे आदर्शवाद से यथार्थवाद तक पंहुच चुके थे। प्रेमचंद ने इसी यथार्थवाद की कड़ी में दलित शोषण के प्रत्युत्तर में उपजती क्रांति के बीज का संकेत कहानी में दिया है जो ~~मुक्तिबोध~~ नागार्जुन के यहाँ आकर हिंसक क्रांति का स्वरूप धारण करती है

सद्गति दलित ~~चेतना~~ प्रश्न को गहराई से व्यक्त करती है। यह उस आधार को निर्मित करती है जिस पर कफन जैसी नग्न यथार्थवादी रचना लिखी गयी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

किसी भी रचना का नामकरण इस आधार पर तय होता है कि रचनाकार रचना के मूल प्रतिपाद्य को नाम के आधार पर संप्रेषित करने में सफल हो। प्रसाद जी ने 'स्कन्दगुप्त' का नाम भी इसी आधार पर लिया।

प्रसाद जी रचना का निर्माण सोद्देश्य करते हैं। स्कन्दगुप्त रचना का निर्माण तत्कालीन अंग्रेजी शासन से मुक्त होने के लिए भारत को आधारवान करना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने ऐतिहासिक पात्र को चुना और स्कन्दगुप्त नाम दिया।

प्रसाद जी का व्यक्तित्व स्वच्छंदतावाद से प्रभावित रहा है। स्वच्छंदतावाद में चरित्रों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को अधिक महत्व दिया जाता है। जिससे उनकी रचनाओं का नामकरण चरित्रों के आधार पर किया जाता है यथा चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।

प्रसाद जी के पात्र उनके दर्शन की अभिव्यक्ति का साधन होते हैं। उनका शैवाद्वैतवाद से प्रभावित आनंदवाद या समरसतावादी दर्शन स्कंदगुप्त के माध्यम से आसानी से व्यक्त हुआ है। रचना के आरंभ में ही स्कन्दगुप्त का कथन

" अधिकार सुख कितना मादक व सारहीन है।" इस तर्क को प्रमाणित करता है।

" मुझे बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि तथा पागलों जैसी संपूर्ण विस्मृति चाहिए।" स्कंदगुप्त का यह कथन आनंदवाद की स्थापना का आधार तैयार करता है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्कंदगुप्त के अतिरिक्त वे अन्य किसी चरित्र का नाम रख सकते थे यथा देवसेना। इससे भावनात्मकता व औदात्य की अभिव्यक्ति तो होती किंतु राष्ट्रीय मुक्ति का प्रश्न अनुत्तरित रह जाता। स्थिति विषयक नामकरण यथा 'हूणों की पराजय' प्रसाद जी के उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पाता।

अतएव संपूर्ण विश्लेषण से यही निष्कर्ष निकलता है कि स्कंदगुप्त सर्वश्रेष्ठ नामकरण है जिसने प्रसाद जी को राष्ट्रीय मुक्ति को अभिव्यक्त करने की क्षमता प्रदान की। वे अपने आनंदवादी दर्शन की भी सहजता से अभिव्यक्ति कर पाए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation